

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 20, निष्कर्ष, मसीह के उद्धार कार्य के 6 चित्र और मसीह के कार्य की दिशा

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 20 है, निष्कर्ष, मसीह के उद्धार कार्य के 6 चित्र और मसीह के कार्य की दिशा।

हम अपने व्याख्यानों को समापन की ओर ले जा रहे हैं।

हमने मसीह के उद्धार की घटनाओं के बारे में और अधिक सोचा है, और अब हम अंतिम बार उनके उद्धार कार्य के छह प्रमुख चित्रों का सारांश दे रहे हैं, और हमने अभी कहा कि चित्र एक ही वास्तविकता को दर्शाते हैं। हमारी ज़रूरतों को दिखाने के छह अलग-अलग तरीके हैं और परमेश्वर अपने उद्धार की घटनाओं, विशेष रूप से अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने बेटे का उपयोग कर रहा है। एक और बात यह है कि प्रत्येक चित्र महत्वपूर्ण है।

इससे पहले कि मैं किसी एक तस्वीर की प्रधानता के लिए तर्क दूँ, हर तस्वीर महत्वपूर्ण है। छह प्रमुख तस्वीरों में से हर एक उल्लेखनीय है। निश्चित रूप से, शास्त्र में मसीह की उपलब्धियों के छह से ज़्यादा चित्र हैं।

जॉन मैकइंटायर ने *द शेप ऑफ सोटेरिओलॉजी में* तेरह छवियों को सूचीबद्ध किया है। फिरौती, मोचन, मोक्ष, बलिदान, प्रायश्चित, प्रायश्चित, प्रायश्चित, सुलह, जीत, दंड/दंड, संतुष्टि, उदाहरण और मुक्ति। हालाँकि मुझे सटीक संख्या के बारे में पता नहीं है और मैं इस सूची में कुछ वस्तुओं को मिला दूंगा, लेकिन उनकी बात सही है।

ब्लोचेट की मदद को स्वीकार करते हुए, मेरे पास चार हैं। नंबर एक पुराने नियम में जड़ों के साथ बाइबिल कैनन में उपस्थिति है।

दूसरा, बहुत से अंशों में इसका उल्लेख है। तीसरा, धार्मिक महत्व। और चौथा, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में मान्यता।

इन मानदंडों का उपयोग करते हुए, मैं निष्कर्ष निकालता हूँ कि छह मुख्य चित्र हैं। वर्तमान में मेरा मुख्य बिंदु यह है कि इनमें से प्रत्येक चित्र क्रॉस और खाली कब्र की अच्छी समझ हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, दूसरों के महत्व को कम करके एक चित्र का समर्थन करना एक गलती है, जैसा कि हमने देखा कि प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास में कई लोगों ने ऐसा किया है।

मसीह के कार्य की पूरी तरह से सराहना करने के लिए, हमें सभी छह चित्रों का अन्वेषण करना चाहिए। मैं अकादमी और चर्च दोनों में अपने अनुभव में छह में से सबसे उपेक्षित चित्र के रूप में दूसरे आदम की नई सृष्टि का हवाला दूंगा। मुझे उम्मीद है कि ये व्याख्यान उस उपेक्षा को दूर करने में योगदान देंगे।

दंडात्मक प्रतिस्थापन आधारभूत है। हालाँकि हर तस्वीर मूल्यवान है, और किसी को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए, मैं निष्कर्ष निकालता हूँ कि दंडात्मक प्रतिस्थापन बाकी सभी के लिए आधारभूत है। जिन लोगों ने मुझे इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी की वार्षिक बैठकों में पेपर पढ़ते हुए सुना है, वे इस निष्कर्ष पर आश्चर्यचकित होंगे।

उन पत्रों में, मैंने कानूनी प्रतिस्थापन को बाइबिल के विषय के रूप में माना, लेकिन सभी छह चित्रों को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों में, मैंने सवाल किया कि क्या उनमें से कोई भी एक मास्टर रूपक था। मुझे वह शब्दावली पसंद नहीं है और मैं अपने कथन को स्पष्ट करूंगा, लेकिन अब मैं प्रतिस्थापन को मसीह के उद्धार कार्य के सिद्धांत के लिए आधारभूत मानता हूँ। मैं अपने अंतिम बिंदु को रेखांकित करने के लिए ईर्ष्यालु हूँ।

सभी छह चित्र बाइबिल से हैं और इसलिए महत्वपूर्ण हैं। दूसरों को कम करके एक छवि का बचाव करना एक गलती है, और किसी भी छवि को अनदेखा करना एक गलती है। फिर भी, मसीह की बचत की घटनाओं का अध्ययन पूरा करने और बाइबिल के चित्रों पर काफी विचार करने के बाद, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि दंडात्मक प्रतिस्थापन को आधारभूत माना जाना चाहिए।

मेरे पास इस रुख के लिए नौ कारण हैं, जिन्हें मैं चार श्रेणियों में बांटूंगा। मुक्ति का इतिहास, मसीह के कार्य के चित्र, प्रमुखता, और ईश्वर की ओर निर्देश। मुक्ति का इतिहास।

सबसे पहले, मुक्तिदायी इतिहास के प्रवाह से एक तर्क दिया जा सकता है। यशायाह 53 कानूनी प्रतिस्थापन सिखाता है। क्रिस्टोफर लिखते हैं कि श्लोक 5 और 6, 10 से 12 में, शब्द उपयुक्त हैं।

यीशु की पीड़ा और मृत्यु उन लोगों के अधर्म को सहेगी, जिन्होंने सोचा था कि वह अपने पापों के लिए परमेश्वर के न्याय के तहत पीड़ित था, अब उन्हें एहसास हुआ कि यह वास्तव में हमारे दुख, अपराध, अधर्म और पाप थे जो उस पर डाले गए थे। बलिदान के प्रतिस्थापन और पाप-सहन की भाषा यशायाह 53 में स्पष्ट रूप से चलती है। इसके अलावा, यशायाह 52:13 से 53:12 नए नियम के लेखकों पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं, जैसा कि हमने पहले कहा था।

यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी के ग्रीक न्यू टेस्टामेंट के दूसरे संस्करण में यशायाह 52:13 से 53:12 के लिए उद्धरणों की सूची में 41 न्यू टेस्टामेंट अंश सूचीबद्ध हैं। मैं कहूंगा कि न्यू टेस्टामेंट में शामिल करने के लिए उनकी श्रेणी न्यू टेस्टामेंट है। दूसरा, हालाँकि मसीह पहले दो सुसमाचारों में तीन बार अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करता है, लेकिन केवल एक जगह पर वह मार्क 10:45 के छुड़ौती कथन में इसके महत्व की व्याख्या करता है, जो मैथ्यू 20:28 के समानांतर है। जैसा कि मैंने पहले तर्क दिया था, यह कथन छुटकारे और दंडात्मक प्रतिस्थापन दोनों

सिखाता है। मैं, हॉवर्ड मार्शल, भजन 49: 7 से 9 और मार्क 8:37 में समान कथनों के प्रकाश में छुड़ौती कथन की व्याख्या करते हुए, सहमत हूँ।

उद्धरण: यीशु बहुतों के लिए फिरौती के रूप में अपना जीवन देकर लोगों की सेवा करता है। मार्क, निस्संदेह, इस कथन को 8:37 की पृष्ठभूमि के विरुद्ध देखने का इरादा रखता है, जहाँ यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या कोई व्यक्ति अपने जीवन के बदले कुछ दे सकता है। इस प्रश्न के पीछे भजन 49:7 से 9 भी निहित है। उद्धरण, वास्तव में, कोई भी व्यक्ति अपने आप को फिरौती नहीं दे सकता या अपने जीवन की कीमत भगवान को नहीं दे सकता, क्योंकि उसके जीवन की फिरौती महंगी है और कभी भी पर्याप्त नहीं हो सकती है, ताकि वह हमेशा के लिए जीवित रहे और कभी भी गड्डे को न देखे, जो मृत्यु का संदर्भ है।

हॉवर्ड मार्शल लिखते हैं कि जो काम मनुष्य नहीं कर सकता, वह मसीह ने किया है। हम यहाँ मानव पाप के परिणामस्वरूप मानव नश्वरता के विचार को समझने और मसीह की मृत्यु में मानवजाति को मृत्यु से मुक्ति दिलाने के लिए परमेश्वर को चुकाई गई छुड़ौती की कीमत को देखने में निश्चित रूप से न्यायसंगत हैं। तीसरा, इब्रानियों 2:17, प्रायश्चित, और 9:23, मसीह का लहू स्वर्ग को शुद्ध करता है, प्रतिस्थापन को रेखांकित करने वाले समावेश का गठन करता है।

इब्रानियों 2:7, जहाँ यह उनकी मृत्यु को याजकीय प्रायश्चित के रूप में उल्लेख करता है, और इब्रानियों 9:23, जो उनके रक्त से स्वर्ग को शुद्ध करने की बात करता है, प्रतिस्थापन की शिक्षा देने वाले समावेश का गठन करता है। विलियम लेन हमारे महान पुजारी के आत्म-समर्पण के प्रतिस्थापनात्मक चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। उद्धरण, पापों के लिए प्रायश्चित करना लोगों के ईश्वर के साथ मेल-मिलाप के साथ उच्च पुजारी कार्यालय की प्राथमिक चिंता को प्रदर्शित करता है।

इस अवधारणा में बलिदान का अर्थ निहित है, और इस संदर्भ में, पुत्र का प्रायश्चित कार्य दूसरों के लिए अपना जीवन देना था। अध्याय 2 की आयत 10, 14, 18 की तुलना करें। इब्रानियों 9:23 यह आश्चर्यजनक सत्य सिखाता है कि मसीह का बलिदान स्वर्ग को भी शुद्ध करता है।

एक बार फिर, लेन की बात सुनें। उद्धरण, मसीह के पूर्ण, परिपूर्ण और पर्याप्त बलिदान ने लोगों के पापों से उत्पन्न अशुद्धता से स्वर्गीय पवित्रस्थान को शुद्ध किया। मांगे गए श्रेष्ठ बलिदान को मसीह के आत्म-बलिदान द्वारा प्रदान किया गया था।

इस प्रकार, इब्रानियों 2:17 की शुरुआत में और बाद में 9:23 में, लेखक मजबूत प्रतिस्थापन नोट्स देता है। वह चाहता है कि हम मसीह, हमारे महायाजक और बलिदान को इस प्रतिस्थापन ढांचे के भीतर समझें - मसीह के कार्य की तस्वीरें।

मसीह के कार्य के अधिकांश अन्य चित्रों में कानूनी प्रतिस्थापन शामिल है। चौथा, इसलिए, यद्यपि छुटकारा प्रतिस्थापन से अधिक है, इसमें यह शामिल है। हमने इसे छुड़ौती के लिए कहा है, मरकुस 10:45। हम गलातियों 3:13 जोड़ते हैं। मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया।

ग्राहम कोल इस पाठ की प्रतिस्थापन शक्ति को सामने लाते हैं। कोल ने अपनी अच्छी किताब गॉड द पीसमेकर में उद्धृत करते हुए बताया है कि कैसे प्रायश्चित शान्ति लाता है। इस बिंदु पर मानवीय संकट को संबोधित करने के लिए ईश्वर ने मसीह में कार्य किया है।

ईश्वरीय कदम आश्चर्यजनक है क्योंकि एक महान परिवर्तन हुआ है। जैसा कि जेफरी, ओवी और सैक सुझाव देते हैं, “दंड प्रतिस्थापन के सिद्धांत का इससे स्पष्ट कथन कल्पना करना कठिन है।”

पॉल बाज़ार की भाषा का सहारा ले रहा है। एक गुलाम को आज़ाद करने के लिए एक कीमत चुकाई जाती है, और इस छुटकारे की कीमत अथाह है। मसीह ने हमारे लिए एक अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया।

पाँचवाँ, दण्डात्मक प्रतिस्थापन मेल-मिलाप का आधार है। 2 कुरिन्थियों 5:21 के अनुसार, हमारे लिए उसने उसे पाप बना दिया जो पाप से अनभिज्ञ था ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। पहले की तीनों आयतें मेल-मिलाप का जिक्र करती हैं।

लिंडा बेलविले स्वीकार करती हैं कि पद 21 में परमेश्वर द्वारा मसीह को पाप करने की सटीक व्याख्या करना कठिन है, लेकिन जोर देकर कहती हैं कि मुख्य विचार स्पष्ट है। उद्धरण, यदि पद 19 के अनुसार हमारे ऋण हमारे खाते में नहीं डाले जाते हैं, तो इसका कारण यह है कि किसी और ने कानूनी रूप से उन्हें ग्रहण कर लिया है, जैसे प्रायश्चित के दिन, लैव्यव्यवस्था 16, और अन्य अवसरों पर दोषबलि ने किया था, लैव्यव्यवस्था 4 और 5। यही कारण है कि परमेश्वर उन लोगों के प्रति मित्रता का प्रस्ताव रख सकता है जो अन्यथा उसके शत्रु हैं। यही मेल-मिलाप है।

वह लिखती हैं कि अगर हम पाप किए जाने के सटीक बिंदु को नहीं समझ पाए, तो भी इसका सार स्पष्ट है। मसीह ने मानवता की दुर्दशा को इतनी बारीकी से पहचाना कि उनका पाप उनका पाप बन गया। उद्धरण समाप्त करें।

बेलविले ने IVP न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री सीरीज़ में 2 कुरिन्थियों पर एक टिप्पणी की है। छठा, मेरे आश्चर्य की बात है, हालाँकि शास्त्र आध्यात्मिक युद्ध के बारे में बहुत कुछ कहता है और कई न्यू टेस्टामेंट अंशों में क्राइस्टस विक्टर थीम को प्रस्तुत करता है, जब यह बताता है कि क्राइस्टस विक्टर कैसे बचाता है, तो यह अपने विषय को कानूनी प्रतिस्थापन के अधीन कर देता है। कुलुस्सियों 2:14.15 और प्रकाशितवाक्य 5:5-9 में, जिनमें से दोनों की हमने जाँच की है।

ग्राहम कोल सही हैं। क्राइस्टस विक्टर को प्रतिस्थापन प्रायश्चित की व्याख्यात्मक शक्ति की आवश्यकता है। कुलुस्सियों 2:14.15 और 2:14 में, हमारे ऋण का बिल जिसमें दस आज़ाएँ शामिल हैं, जिस पर हमने अपनी भक्ति पर हस्ताक्षर किए और हमने एक तरफ तोड़ दिया और दूसरी तरफ, हमें दोषी ठहराने वाला हस्तलिखित बिल यीशु के क्रूस पर चढ़ा दिया गया।

वह हमारा कर्ज चुकाता है। और फिर तुरंत 2:15 कहता है कि मसीह में परमेश्वर प्रधानताओं और शक्तियों पर विजय प्राप्त करता है, उन पर सार्वजनिक प्रदर्शन करता है। इसका मतलब है, यह इसलिए है क्योंकि दंडात्मक प्रतिस्थापन है इसलिए जीत है।

एफएफ ब्रूस, मैंने पहले यह नहीं कहा, एफएफ ब्रूस कुलुस्सियों 2:14.15 के बीच संबंध का सुझाव देते हैं। जब शैतान देखते हैं कि मानो हमारे कर्ज का बिल यीशु के क्रूस पर कीलों से ठोका गया है, तो वे खुशी से चिल्लाते हैं। अब हम उसे पकड़ चुके हैं। वह शापित है, हमारा दुश्मन है।

लेकिन परमेश्वर उन पर पलटवार करता है क्योंकि हमारा दंड देने वाला विकल्प विजेता है। और हमारे स्थान पर दंड का भुगतान करने से उन पर पलटवार होता है और वे पराजित हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर अपनी स्वयं की कानूनी माँगों को पूरा करता है और इस प्रकार उनके हथियारों और उनकी किसी भी गरिमा को छीन लेता है। दंड का प्रतिस्थापन विजेता के रूप में मसीह के लिए मौलिक है।

हम प्रकाशितवाक्य 5:5-9 में भी यही बात देखते हैं। यूहन्ना यहूदा के गोत्र के सिंह को देखता है जिसने पुस्तक खोलने के लिए विजय प्राप्त की है या विजय प्राप्त की है, विजय प्राप्त की है। उसने अपने खून से, अपनी हिंसक मृत्यु से विजय प्राप्त की। लेकिन फिर यूहन्ना फिर से देखता है और मसीह को विजयी राजा के रूप में नहीं देखता, बल्कि मसीह को मेमना के रूप में देखता है जो लोगों को खरीदने के लिए, दुनिया को खरीदने के लिए अपने खून को फिरौती के रूप में देकर प्रायश्चित्त करता है, जिसका अर्थ प्रकाशितवाक्य 5:5-9 के अनुसार हर जनजाति और भाषा और लोगों के समूह और भौगोलिक स्थान से है।

सातवाँ, मैं कानूनी प्रतिस्थापन के प्रायश्चित्त विषय को अन्य विषयों के लिए आधारभूत मानता हूँ, हालाँकि मैं छह विषयों में से प्रत्येक को महत्व देता हूँ। सातवाँ, बलिदान प्रतिस्थापन से दृढ़ता से प्रभावित है। मसीह के बलिदान या उसके वास्तविक बलिदान के लिए पुराने नियम की पृष्ठभूमि से निपटने वाले सभी निम्नलिखित अंश प्रतिस्थापन का संकेत देते हैं।

निर्गमन 12:13, लैव्यव्यवस्था 16, यशायाह 53:10, रोमियों 3:25, 8:3, इब्रानियों 2:17, 1 पतरस 2:24, 3:18, और प्रकाशितवाक्य 5:9। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ, मैं छुटकारे, मेल-मिलाप, मसीह के विजेता होने और बलिदान को दंडात्मक प्रतिस्थापन तक सीमित नहीं कर रहा हूँ। बल्कि, मैं यह तर्क दे रहा हूँ कि जब बाइबल के लेखकों ने मसीह के प्रायश्चित्त की बात की, तो चाहे वे कोई भी चित्र इस्तेमाल कर रहे हों, प्रतिस्थापन तुरंत दिमाग में आया। यह अन्य चित्रों में इस तरह फैला हुआ है कि यह सुझाव देता है कि यह आधारभूत है।

प्रमुखता, आठवाँ, कानूनी प्रतिस्थापन शास्त्र में प्रमुख है। इसकी जड़ पुराने नियम की मिट्टी में गहरी है। निर्गमन 12:13, लैव्यव्यवस्था 1:9, 2:1-2, 3:3, और 5:4, 29, और 31, लैव्यव्यवस्था 1:9, 2:1-2, 3:3, और 5:4, 29, और 31, लैव्यव्यवस्था 16:21, और 22, यशायाह 53:5 और 6, और 12 से 10।

नए नियम में प्रतिस्थापन प्रमुख है। रोमियों 3:25, 26, रोमियों 8:1-4, 2 कुरिन्थियों 5:21, गलातियों 3:13, कुलुस्सियों 2:14, इब्रानियों 2:17, 1 पतरस 2:24, 1 पतरस 3:18, 1 यूहन्ना 2:2, 4:10, और प्रकाशितवाक्य 5:9। मेरा नौवाँ तर्क यह है कि प्रायश्चित्त मसीह के कार्य की ईश्वरीय दिशा का हिस्सा है। नौवाँ, दंडात्मक प्रतिस्थापन यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की सबसे गहन दिशा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, जैसा कि मैं आगे तर्क देता हूँ।

मसीह के उद्धार कार्य की दिशाएँ। हमने यीशु की नौ उद्धार घटनाओं के बारे में बहुत कुछ चर्चा की है। हमने उन छह चित्रों की गहराई से जाँच की है जो उन घटनाओं की व्याख्या करते हैं।

लेकिन इससे भी ज़्यादा है। मसीह की उद्धारकारी उपलब्धि पर विचार करने का एक उपयोगी तरीका यह है कि हम इसे उन दिशाओं के संदर्भ में समझें जिनकी ओर यह इशारा करता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह तीन दिशाओं की ओर इशारा करता है।

स्वयं परमेश्वर की ओर, हम इसे ऊपर की ओर जाने वाली दिशा कहेंगे। हमारे शत्रुओं की ओर, नीचे की ओर जाने वाली दिशा। और पूरी सृष्टि की ओर, विश्वासियों ने एक क्षैतिज आयाम शामिल किया।

मसीह का उद्धार कार्य स्वयं परमेश्वर की ओर निर्देशित है। सबसे अधिक गहराई से, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर की ओर निर्देशित है। अविश्वसनीय रूप से, मसीह का कार्य स्वयं परमेश्वर के जीवन को प्रभावित करता है।

इसमें दंडात्मक प्रतिस्थापन, मेलमिलाप का ईश्वरीय पहलू, बलिदान के पहलू के रूप में मसीह का कार्य, दूसरा आदम मूल भाव, और संभवतः मुक्ति शामिल हैं। दंडात्मक प्रतिस्थापन। प्रतिस्थापन मुख्य रूप से स्वयं ईश्वर की ओर निर्देशित है।

परमेश्वर मसीह में अपने क्रोध का दण्ड सहकर अपने न्याय को संतुष्ट करता है। क्योंकि प्रतिस्थापन हमें क्षमा प्रदान करता है, इसलिए इसका एक क्षैतिज दिशा भी है। कुलुस्सियों 2:14.15 में नीचे की दिशा निहित है, जहाँ प्रतिस्थापन मसीह को विजेता के रूप में आगे बढ़ाता है।

इससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जैसे-जैसे घटनाएँ एक साथ आती हैं और चित्र एक-दूसरे से मिलते हैं, वैसे-वैसे दिशाएँ भी एक-दूसरे से मिलती हैं। यह कुछ ऐसा है जैसे यह कहना कि हालाँकि व्यवस्थित धर्मशास्त्र एक वैध उपक्रम है, लेकिन सभी शास्त्र ईश्वर द्वारा प्रेरित हैं और शिक्षा, फटकार, सुधार, निर्देश और धार्मिकता के लिए लाभदायक हैं; बाइबल व्यवस्थित धर्मशास्त्र का पाठ नहीं है।

यह एक कहानी की किताब है, जो बहुत सारी तस्वीरें पेश करती है। इसलिए हम इससे धर्मशास्त्र प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन हमें ऐसा व्याख्यात्मक रूप से और बहुत सावधानी से करना चाहिए। सुलह।

मेलमिलाप तीनों दिशाओं में होता है। सबसे गहराई से, परमेश्वर अपने बेटे की मृत्यु और पुनरुत्थान में खुद से मेलमिलाप करता है। परिणामस्वरूप, मनुष्य सृष्टि के साथ-साथ परमेश्वर से भी मेलमिलाप कर लेता है।

कुलुस्सियों 1:20. परमेश्वर के शत्रुओं को अधीन किए जाने के अर्थ में उद्धरण चिह्नों में समेट दिया गया है। कुलुस्सियों 1:20.2:15. बलिदान। जैसा कि हमने देखा, लेवी के बलिदान का उद्देश्य लोगों और पवित्रस्थान दोनों के लिए प्रायश्चित्त करना था।

क्योंकि लोगों के पापों ने इसे अशुद्ध कर दिया था, इसी के अनुरूप, इब्रानियों 9:22.23 सिखाता है कि मसीह की मृत्यु स्वर्गीय पवित्रस्थान को शुद्ध करती है क्योंकि हमारे पापों ने इसे अशुद्ध कर दिया था।

इस अर्थ में, बलिदान की दिशा ऊपर की ओर है। दूसरा आदम। जैसे आदम की अवज्ञा परमेश्वर के प्रति खड़ी की गई थी, वैसे ही दूसरे आदम की आज्ञाकारिता भी परमेश्वर के प्रति खड़ी की गई थी।

उसने सभी बातों में पिता की आज्ञा का पालन किया। मुक्ति। प्रश्न चिह्न।

पवित्रशास्त्र हमें कभी नहीं बताता कि छुटकारे की कीमत किसे चुकाई जाती है। मैं अपनी खुद की व्यवस्थित पद्धति का पालन करता हूँ, कम से कम कभी-कभी तो लगातार। निश्चित रूप से, शैतान को फिरौती देने का दृष्टिकोण गलत था।

*द क्रॉस ऑफ़ क्राइस्ट, पृष्ठ 175* में यही तरीका अपनाया है। लेकिन अगर मैं ऐसा करता, तो यह भगवान के लिए होता।

इसे मुक्ति कहना होगा, हालाँकि शास्त्र ऐसा नहीं कहता। तार्किक रूप से, धर्मशास्त्रीय रूप से, और तार्किक रूप से, यह स्वयं ईश्वर की ओर निर्देशित है। स्पष्ट रूप से, मुक्ति पाने वाले लोगों के लिए एक क्षैतिज आयाम है।

तो, मसीह का काम सबसे ज़्यादा गहराई से खुद परमेश्वर के जीवन की ओर निर्देशित है। सेंट एंसलम सही थे। क्या उपलब्धि है।

मसीह का उद्धार कार्य हमारे शत्रुओं की ओर निर्देशित है। यह क्राइस्टस विक्टर थीम की प्रतिभा है जो मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को हमारे शत्रुओं की ओर निर्देशित करती है। मसीह का कार्य शैतान, उसके राक्षसों, संसार, सही रूप से विचार किए जाने पर, मृत्यु और नरक को नष्ट करता है।

कम से कम दो अन्य विषयों में नीचे की ओर पहलू है। मसीह के क्रूस के लहू के द्वारा, वह सभी चीज़ों का मेल-मिलाप करता है, जिसमें संदर्भ में सिंहासन, प्रभुत्व, शासक और अधिकारी शामिल हैं। कुलुस्सियों 1:16 और 20.

मसीह दुष्टात्माओं को वश में करके उनसे मेल-मिलाप करता है, जिससे उसके राज्य में शांति बनी रहती है। कुलुस्सियों 2:15 से तुलना करें। मुक्ति ऊर्ध्वाधर हो सकती है, निश्चित रूप से क्षैतिज है और इसमें नीचे की ओर भी संकेत हैं।

हम अंधकार के प्रभुत्व से मुक्त हो गए हैं, कुलुस्सियों 1:13। और संसार के प्राथमिक सिद्धांतों की दासता से, गलातियों 4:3। पौलुस के इस विषय को समझना कठिन है। हम संसार के प्राथमिक सिद्धांतों से मुक्त हो गए हैं।

पॉल ने एक से ज़्यादा बार इसका ज़िक्र किया है। मुझे यकीन नहीं है। यह भ्रामक हो जाता है क्योंकि प्राथमिक सिद्धांत कभी-कभी एक विचलित पुण्य यहूदी धर्म से जुड़े हुए लगते हैं और कभी-कभी गैर-यहूदी बुतपरस्ती से।

मुझे याद नहीं कि यह सुझाव किसने दिया, लेकिन हमेशा की तरह, मैं दूसरों के अच्छे विचारों को लेकर उन्हें बपतिस्मा दे रहा हूँ, मुझे उम्मीद है। इसलिए, इस दुनिया के प्राथमिक सिद्धांतों की एक संभावित व्याख्या जिससे मसीह हमें मुक्ति दिलाता है, वह यह है कि यह विधर्मी यहूदी धर्म और घोर बुतपरस्ती दोनों में शैतानी तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। मसीह का उद्धार कार्य स्वयं परमेश्वर की ओर निर्देशित है।

यह हमारे शत्रुओं की ओर निर्देशित है। साथ ही, मसीह का उद्धार कार्य मानव जाति और यहाँ तक कि सृष्टि की ओर भी निर्देशित है। मसीह के कार्य के सभी विषय मानव जाति से संबंधित हैं क्योंकि, जैसा कि परमेश्वर ने यूसुफ से कहा था, तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा, मत्ती 1:21।

विभिन्न चित्र यीशु द्वारा अपने लोगों को बचाने को व्यक्त करने के विभिन्न तरीके हैं। मेल-मिलाप का अर्थ है शांति स्थापित करना, और मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर के साथ और फिर लोगों के साथ शांति स्थापित करते हैं। छुटकारे में, परमेश्वर मसीह के लहू की कीमत पर पाप के मानव दासों को खरीदता है।

कानूनी प्रतिस्थापन परमेश्वर को प्रसन्न करता है और विश्वास करने वाले दोषियों को क्षमा प्रदान करता है। मसीह, हमारे विजेता का कार्य, मुख्य रूप से हमारे आध्यात्मिक शत्रुओं पर निर्देशित है, लेकिन यह क्षैतिज है कि यह हमें उनके चंगुल से बचाता है। दूसरे आदम के रूप में, मसीह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है ताकि हम में परमेश्वर की छवि को पुनर्स्थापित किया जा सके और हमें महिमा और प्रभुत्व दिया जा सके।

मसीह, हमारा बलिदान, हमें अपने लहू से शुद्ध करता है। सृष्टि वास्तव में एक कुंजी है। मसीह के उद्धार कार्य के क्षैतिज आयाम में सृष्टि शामिल है।

पवित्रशास्त्र भविष्यवाणी करता है कि एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी होगी। यशायाह 65:7-25. यशायाह 66:22-23.

मत्ती 19:28 में यीशु सभी चीज़ों के पुनर्जन्म या नवीनीकरण की बात करते हैं। रोमियों 8:20-22. 2 पतरस 3:10-13.

प्रकाशितवाक्य 21 और 22. पतन को देखते हुए, नया आकाश और नई पृथ्वी क्यों होगी? इसका उत्तर है क्रूस और खाली कब्र के कारण। मसीह के कार्य के ब्रह्मांडीय प्रभाव हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि, उद्धारण, परमेश्वर ने अपने क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करके, चाहे वह पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, सब वस्तुओं को अपने साथ मिलाने की इच्छा प्रकट की। कुलुस्सियों 1:19 और 20. मसीह का कार्य परमेश्वर के संसार को छुटकारा दिलाता है।

क्योंकि, उद्धारण, सृष्टि स्वयं भ्रष्टाचार के बंधन से मुक्त हो जाएगी और परमेश्वर की संतानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। रोमियों 8:20-22। दंडात्मक प्रतिस्थापन और दूसरे आदम की छवियाँ भी ब्रह्मांड के उद्धार में भूमिका निभाती हैं क्योंकि जैसे शाप आदम की अवज्ञा के कारण लगाया गया एक कानूनी दंड था, वैसे ही शाप को हटाना दूसरे आदम की आज्ञाकारिता के कारण एक दंडात्मक घटना है।

निष्कर्ष। तीनों दिशाएँ महत्वपूर्ण हैं: ऊपर की ओर, क्षैतिज और नीचे की ओर। मसीह की उद्धारकारी उपलब्धि, जो उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान पर केन्द्रित है, परमेश्वर, मानवजाति, सृष्टि और हमारे आत्मिक शत्रुओं को प्रभावित करती है।

क्षैतिज, मनुष्य के उद्धार से जुड़ी दिशा या आयाम, पवित्रशास्त्र में अन्य की तुलना में अधिक प्रचलित है। छह चित्रों में ऐसे कई अंश शामिल हैं जो मध्यस्थ के कार्य के माध्यम से परमेश्वर द्वारा हम पापियों को बचाने के बारे में बताते हैं। और उनमें से कुछ चित्र सिखाते हैं कि मसीह के उद्धार कार्य के कारण, एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी होगी।

मैं नीचे तर्क दूंगा कि यह आयाम, नीचे की दिशा की तरह, ऊपर की दिशा का व्युत्पन्न है। ईश्वर की ओर निर्देशित ऊपर की ओर का आयाम सबसे मौलिक और गहरा है। मसीह का कार्य स्वयं ईश्वर के जीवन को प्रभावित करता है।

जैसा कि हमारे सारांशों से पता चलता है, मसीह के कार्य की पहल परमेश्वर, त्रिएकत्व की है। इसका मतलब है कि परमेश्वर खुद को प्रभावित करने के लिए क्रूस और खाली कब्र के माध्यम से कार्य करता है। वह अपने न्याय को संतुष्ट करता है, खुद को समेटता है, दूसरे आदम की आज्ञाकारिता से प्रसन्न होता है, और स्वर्ग को शुद्ध करता है।

मसीह में परमेश्वर परमेश्वर को प्रभावित करता है। यह कई कारणों से गहरा है। सबसे पहले, यह उद्धार की पहल और पूर्ति में परमेश्वर के अनुग्रह की महानता को दर्शाता है।

यह कहानी धरती पर इंसानों द्वारा नहीं गढ़ी गई। ईसाई धर्मशास्त्र के बारे में मेरी समझ यही है कि यह एक क्षमाप्रार्थी मूल्य है। यह पुस्तक हमें केवल मनुष्यों द्वारा नहीं दी गई है।

ओह, यह मनुष्यों द्वारा लिखा गया है क्योंकि पवित्रशास्त्र की प्रेरणा परमेश्वर की कृपा का एक उपसमूह है। परमेश्वर ने पापियों से उनके स्वयं के लेखन के माध्यम से संवाद किया, लेकिन परमेश्वर ने उनसे संवाद किया, और परमेश्वर के पवित्र पुरुषों ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर लिखा, 2 पतरस 1:20 और 21। यह कहानी पृथ्वी पर मनुष्यों द्वारा कल्पना नहीं की गई थी।

यह ईश्वर द्वारा स्वर्ग में कल्पना की गई थी। किस तरह का विश्व धर्म यह मानता है कि ईश्वर अपने चरित्र की माँगों को पूरा करने और इस तरह अपने प्राणियों को बचाने के लिए मरने के लिए मनुष्य बन जाता है? एक दिव्य रूप से प्रकट, अद्वितीय और अनुग्रहकारी धर्म। दूसरा कारण अवतार का रहस्य ही है।

यदि हम अवतार को पूरी तरह से नहीं समझ सकते, तो हम क्रूस और खाली कब्र को पूरी तरह से कैसे समझ पाएंगे? तीसरा, अब्राहम के साथ वाचा में परमेश्वर के प्रवेश की अवधारणा और अंततः नई वाचा में हमारे साथ वाचा रखने वाले या तोड़ने वाले परमेश्वर को कैसे प्रभावित करते हैं, यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। लेकिन दिन के अंत में, हम स्वीकार करते हैं कि हम मसीह के क्रूस और खाली कब्र के माध्यम से परमेश्वर के स्वयं को प्रभावित करने को समझने की कोशिश में अपनी गहराई से बाहर हैं क्योंकि यद्यपि मसीह एक वाचा-पालन करने वाला व्यक्ति है, वह परमेश्वर भी है। ये बातें समझ से परे हैं।

वे हमारे लिए बहुत ज़्यादा हैं। हम क्या करें? हम उनके लिए बहुत आभारी होंगे। यह ऊपर की ओर जाने वाला तत्व क्षैतिज और नीचे की ओर जाने वाले तत्वों का आधार है।

मसीह के कार्य की ईश्वरीय दिशा के साथ, अन्य दो दिशाएँ, ईश्वरीय दिशा के बिना, अन्य दो मौजूद नहीं होंगी। वे बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मसीह के कार्य के स्वयं परमेश्वर पर प्रभाव से व्युत्पन्न हैं। क्योंकि परमेश्वर स्वयं को संतुष्ट करता है, वह हमारे शत्रुओं को पराजित करता है और हमें और सृष्टि को बचाता है।

मैं सिक्लेयर फर्ग्यूसन से सहमत हूँ। मसीह के कार्य की एक व्यापक बाइबिल व्याख्या यह स्वीकार करती है कि प्रायश्चित, जो प्रायश्चित में परमेश्वर पर और क्षमा में मनुष्य पर समाप्त होता है, विश्वासियों पर उसके प्रभाव के विनाश में शैतान पर भी समाप्त होता है। और यह ठीक इसी कारण से होता है क्योंकि यह पहले दो को पूरा करता है।

मैं असहमत नहीं हूँ, लेकिन मैं यह जोड़ना चाहूँगा कि प्रायश्चित मनुष्य और शैतान पर समाप्त होता है क्योंकि यह ईश्वर पर समाप्त होता है। मेरी शब्दावली में, क्षैतिज और नीचे की ओर दोनों पहलू ऊपर की ओर के पहलू पर निर्भर करते हैं। नीचे की ओर, क्राइस्टस विक्टर, ईश्वर की ओर की दिशा का व्युत्पन्न है।

फर्ग्यूसन ने इसे ठीक ही कहा है। गुस्ताव एलेन की पुस्तक क्राइस्टस विक्टर, जिसका शीर्षक एक पत्र बन गया, का संदर्भ, प्रायश्चित के इस दृष्टिकोण के लिए एक लेबल, मैं उद्धृत करता हूँ, इस संबंध में, गुस्ताव एलेन का दृष्टिकोण गंभीर रूप से अपर्याप्त था। उन्होंने दंडात्मक संतुष्टि के भाव को जीत के भाव से बदल दिया।

लेकिन जैसा कि हमने शास्त्रों में देखा है, ईश्वरीय न्याय की संतुष्टि, हमारे पापों की क्षमा, और मसीह द्वारा शैतान को हराना परस्पर अनन्य नहीं बल्कि पूरक हैं। प्रत्येक मसीह के कार्य का एक अनिवार्य आयाम है। प्रत्येक हमारे उद्धार के लिए महत्वपूर्ण है, और प्रत्येक प्रायश्चित का एक पहलू प्रदान करता है जिससे अन्य पहलुओं को अधिक स्पष्टता और समृद्धि के साथ देखा जा सकता है।

इसके अलावा, ये पहलू सबसे गहरे स्तर पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। नए नियम के लिए, प्रायश्चित के नाटकीय पहलू, क्राइस्टस विक्टर, में एक ऐसी जीत शामिल है जो प्रायश्चित के माध्यम से सुरक्षित होती है। इसलिए, एलेन यह पहचानने में विफल रहे कि प्रायश्चित के दंडात्मक दृष्टिकोण के विरुद्ध नाटकीय दृष्टिकोण को स्थापित करने में, उन्होंने अनिवार्य रूप से इसके वास्तविक गतिशीलता के नाटकीय दृष्टिकोण को प्रभावित किया।

निष्कर्ष का निष्कर्ष। मैंने इन व्याख्यानों की शुरुआत यह कहकर की कि मसीह का उद्धारक कार्य गहरा, विशाल और शानदार है। मैं उसी तरह से समाप्त करता हूँ।

मसीह का कार्य बहुत बड़ा है। इन घटनाओं और बाइबिल के चित्रों पर बीस घंटे का व्याख्यान उनके उद्धार कार्य को समाप्त नहीं करता। यह बहुत गहरा है।

परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण को ध्यान से सुनकर हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, लेकिन हमारा ज्ञान हमें केवल इतना ही सिखा सकता है। हम अवतार को पूरी तरह से नहीं समझ सकते। हम क्रूस और खाली कब्र की गहराई को कैसे समझेंगे? हम आंशिक रूप से समझते हैं, और उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब हम पूरी तरह से समझ जाएँगे, हम पूजा करते हैं, सेवा करते हैं और गवाही देते हैं।

पूरी समझ के लिए इंतज़ार करना होगा। उद्धरण: अभी के लिए, हम एक दर्पण में धुंधले और धुंधले रूप से देखते हैं, लेकिन फिर आमने-सामने होंगे। अब मैं आंशिक रूप से जानता हूँ, और फिर मैं पूरी तरह से जाना जाऊँगा, जैसा कि मैं हूँ, तब मैं पूरी तरह से जान जाऊँगा, जैसा कि मैं पूरी तरह से जाना जा चुका हूँ।

1 कुरिन्थियों 13:12. मसीह का उद्धार कार्य शानदार है। यह परमेश्वर को प्रसन्न करता है, मनुष्यों को बचाता है, और हमारे शत्रुओं को परास्त करता है। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान स्वयं सृष्टि को भी बचाता है।

ऐसा ज्ञान मेरे लिए बहुत अद्भुत है। यह बहुत ऊंचा है। मैं इसे प्राप्त नहीं कर सकता।

भजन 139, पद 6. ओह, परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितना गहरा है! उसके विचार कितने अथाह हैं, और उसके मार्ग कितने अगम हैं। क्योंकि प्रभु के मन को किसने जाना है या उसका सलाहकार कौन हुआ है या किसने उसे कोई उपहार दिया है कि उसे प्रतिफल मिले? रोमियों 11:33 से 35. आमीन।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 20 है, निष्कर्ष, मसीह के उद्धार कार्य की 6 तस्वीरें और मसीह के कार्य की दिशा।